विचार बिन्दु

सुधार के बिना पश्चाताप ऐसा है जैसे सुराख़ बंद किये बिना जहाज में से पानी निकालना। –पामर

सोशल मीडिया बच्चों के लिए फायदेमंद है या नुकसानदेह

बच्चों के लिए सोशल मीडिया के फायदे और नुकसान पर दुनियाभर में चर्चा और मंथन का बाजार गर्म हो रहा है। सोशल मीडिया इंटरनेट पर आधारित प्लेटफॉर्म हैं। व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, टेलीग्राम आदि नेटवर्क को सोशल मीडिया कहा जाता है। संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के मुताबिक दुनिया में हर आधे सेकेंड में कोई न कोई बच्चा पहली बार ऑनलाइन दुनिया में दाखिल होता है। यूएस सर्जन जर्नल की एक रिपोर्ट के मुताबिक 8 से 12 साल के 40 फीसदी बच्चे और 13 से 17 साल के 95 फीसदी बच्चे सोशल मीडिया पर एक्टिव रहते हैं। जर्नल में बताया गया है किस तरह सोशल मीडिया बच्चों की मेंटल हेल्थ को नुकसान पहुंचा रहा है। खासतौर से उन बच्चों को जो एक दिन में तीन घंटे से ज्यादा का वक्त सोशल मीडिया पर बिताते हैं वो डिप्रेशन और एंजाइटी के शिकार होने के डबल रिस्क पर होते हैं। सोशल मीडिया के उपयोग के चलते बच्चे की नींद में भी कमी देखने को मिलती है। जो बच्चे देर रात तक सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं उनकी नींद पूरी नहीं हो पाती है क्योंकि उन्हें सुबह स्कूल भी जाना होता है। सोशल मीडिया के उपयोग के चलते बच्चों की पढ़ाई लिखाई पर भी प्रभाव पड़ता है।

एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक ऑस्ट्रेलिया ने 16 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगाने वाला कानून पास कर लिया है। यह कदम देश में सोशल मीडिया के बच्चों पर मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव को लेकर बढ़ती चिंताओं के बीच उठाया गया है। इस कानून के तहत, तकनीकी कंपनियों जैसे मेटा (इंस्टाग्राम, फेसबुक), टिकटॉक को अपने प्लेटफॉर्म्स पर बच्चों के अकाउंट्स को ब्लॉक करना होगा, अन्यथा उन्हें 49.5 मिलियन ऑस्ट्रेलियाई डॉलर तक का जुर्माना भुगतना पड़ेगा। यह प्रतिबंध अगले एक साल में पूरी तरह लागू होगा। ऑस्ट्रेलिया का यह कदम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी चर्चा का विषय बना है।

दुनियाभर में बच्चों पर सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव को लेकर इस समय चर्चा और बहस हो रही है। अनेक अध्ययन रिपोर्टों में कहा गया है कि इनका बचपन रचनात्मक कार्यों की जगह डेटा के जंगल में गुम हो रहा है। पिछले कई सालों में सूचना तकनीक ने जिस तरह से तरक्की की है, इसने मानव जीवन पर गहरा प्रभाव डाला है बल्कि एक तरह से इसने जीवनशैली को ही बदल डाला है। बच्चे और युवा एक पल भी सोशल मीडिया से खुद को अलग रखना गंवारा नहीं समझते। इनमें हर समय एक तरह का नशा सा सवार रहता है। वैज्ञानिक भाषा में इसे इंटरनेट एडिक्शन डिस्ऑर्डर कहा गया है। विशेषज्ञ चेतावनी दे रहे हैं कि जब सोशल मीडिया का इस्तेमाल लत की हद तक पहुंच जाए, तो यह न केवल मानसिक सेहत बल्कि शारीरिक समस्याओं का भी कारण बन सकता है। यही वजह है कि दुनियाभर में सोशल मीडिया कंपनियों की जिम्मेदारियों को बढ़ाने की मांग जोर पकड़ रही है। खासतौर पर बच्चों की ऑनलाइन सुरक्षा पर फोकस करते हुए कई देश नए कानून बना रहे हैं।

अत्यधिक स्क्रीन टाइम आंखों की रोशनी, नींद की समस्याओं और मोटापे का कारण बन सकता है। स्क्रीन के सामने अधिक समय बिताने से बच्चों के सोशल स्किल कमजोर हो सकते हैं। सोशल मीडिया और विज्ञापनों के माध्यम से बच्चे अवास्तविक अपेक्षाएं पाल सकते हैं।

दरअसल, बच्चों के लिए मोबाइल फोन और टीवी का आकर्षण अब आम बात हो गई है। अभिभावक भी अपने काम के चक्कर में बच्चों को मोबाइल फोन देकर या टीवी के सामने बैठा देते हैं। इसका बच्चों पर बहुत खराब असर पड़ता है। अत्यधिक स्क्रीन टाइम आंखों की रोशनी, नींद की समस्याओं और मोटापे का कारण बन सकता है। स्क्रीन के सामने अधिक समय बिताने से बच्चों के सोशल स्किल कमजोर हो सकते हैं। सोशल मीडिया और विज्ञापनों के माध्यम से बच्चे अवास्तविक अपेक्षाएं पाल सकते हैं। कई रिसर्च में पता चला है कि ज्यादा स्क्रीन टाइम की वजह से बच्चों और किशोरों में नींद की कमी और डिप्रेशन की शिकायत देखी जा रही है। डिप्रेशन बढ़ने से उनके स्वास्थ्य और फिजिकल फिटनेस पर भी बुरा असर पड़ता है।

भारत में बच्चों को सोशल मीडिया पर विचरण की पूरी आज़ादी है। यहाँ उम्र की कोई बाधा नहीं है। सच तो यह है भारत में बच्चों का बचपन आभासी दुनियां में खो गया है। एम्स की एक रिपोर्ट के अनुसार आई एक्सपर्ट का यह भी कहना है कि जितनी छोटी स्क्रीन होगी, उतनी समस्या बढ़ेगी। आज घर घर में बच्चे धड़ल्ले से मोबाइल पर स्क्रीनिंग कर रहे है। उन्हें इस बात की कोई चिंता नहीं है की यह उनके स्वास्थ्य के लिए कितनी खतरनाक है विशेष रूप से आँखों के लिए। एम्स के डॉक्टरों ने बच्चों में बढ़ते मायोपिया (दूर की चीजें साफ न दिखना) की एक वजह बढ़ता स्क्रीन टाइम बताया है। एम्स की गाइडलाइंस के अनुसार एक दिन में मैक्सिमम दो घंटे से ज्यादा स्क्रीन टाइम नहीं होना चाहिए। एम्स के डॉक्टरों ने चेताते हुए कहा कि यही स्थिति रही तो 2050 तक 40 से 45 परसेंट बच्चे मायोपिया के शिकार हो जाएंगे। इसके लिए एम्स की गाइडलाइंस को फॉलो करना चाहिए। डॉक्टरों ने कहा कि मायोपिया में आंख की पुतली का साइज बढ़ जाता है और इसकी वजह से प्रतिबिंब रेटिना पर नहीं बनता है।

स्क्रीन टाइम ज्यादा होने का सबसे पहला असर बच्चों की आंखों की रोशनी पर पड़ रहा है। स्क्रीन को नजदीक और एकटक देखने से आंखें ड्राई होने लगती हैं यही हालात रहने पर आंखों की रोशनी कम होने लगती है। मोबाइल बच्चों का दोस्त है या दुश्मन। बिना विलंब किए अभिभावकों को इस पर गहनता से मंथन की जरुरत है। आजकल मोबाइल का ज्यादा इस्तेमाल बच्चों को इंटरनेट एडिक्शन की तरफ ले जा रहा है। इस तरह के एडिक्शन से मानसिक बीमारियां पैदा होती हैं और ऐसे में बच्चे कोई न कोई गलत कदम उठा लेते हैं। आजकल के बच्चे इंटरनेट लवर हो गए हैं।

देश में इंटरनेट के तेजी से बढ़ते इस्तेमाल में बचपन खोता जा रहा है जिसकी परवाह न सरकार को है और न ही समाज इससे चिंतित है। ऐसा लगता है जैसे गैर जरुरी मुद्दे हम पर हावी होते जारहे है और वास्तविक समस्याओं से हम अपना मुंह मोड़ रहे है। यदि यह यूँ ही चलता रहा तो हम बचपन को बर्बादी की कगार पर पहुंचा देंगे। देश के साथ यह एक बड़ी नाइंसाफी होगी जिसकी कल्पना भी हमें नहीं है। जब से इंटरनेट हमारे जीवन में आया है तबसे बच्चे से बुजुर्ग तक आभासी दुनियां में खो गए है। हम यहाँ बचपन की बात करना चाहते है। देखा जाता है पांच साल का बच्चा भी आँख खोलते ही मोबाइल पर लपकता है। पहले बड़े इसे अपने काम के लिए करते थे। अब बच्चे भी इंटरनेट के शौकीन होते जा रहे हैं। बाजार ने उनके लिए भी इंटरनेट पर इतना कुछ दे दिया है कि वह पढ़ने के अलावा बहुत कुछ इंटरनेट पर करते रहे हैं। पेरेंट्स को बच्चों की ऐसी गतिविधियों पर नजर रखनी चाहिए और समय रहते उनकी ऐसी आदत को पॉजेटिव तरीके से दूर करना चाहिए।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल गुरूवार 12 दिसम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

मार्गशीर्ष मास, शुक्ल पक्ष, द्वादशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, अश्विनी नक्षत्र प्रातः 9:53 तक, परिघ योग दिन 3:23 तक, बव करण दिन 11:48 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-मेष, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-मकर, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से 9:53 तक है। आज बुध उदय पूर्व में प्रातः 9:45 पर होगा। अखंड द्वादशी, व्यंजन द्वादशी, दान द्वादशी और भरणी दीपम है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:18 तक, चर 11:03 से 12:20 तक, लाभ-अमृत 11:10 से 2:55 तक, शुभ 4:12 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:10, सूर्यास्त 5:30

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

सिंह

व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी।

धनु

घर-परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी।

वृष

मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन प्राप्ति में विलम्ब होगा। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं।

मकर

घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मिथुन

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है।

तुला

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

कुंभ

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

वृश्चिक

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

एफ.डी.आई. : विदेशी निवेशकों का भरोसा जीत रहा भारत

राम शर्मा

पिछले दिनों एक समाचार ने पूरे देश के अखबारों की सुर्खियां बटोरी। यह समाचार था भारत में लगातार बढ़ रहे विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के बारे में। भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) बीते 10 वर्षों में तेजी से बढ़ा है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, इस दौरान 600 अरब डॉलर से ज्यादा का एफडीआई आया है।

उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (डीपीआईआईटी) और भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के आंकड़ों के अनुसार, देश में 1991 के निजीकरण के बाद से जून 2024 तक कुल 1,059 अरब डॉलर का एफडीआई आया है। इसमें से 689 अरब डॉलर यानी 65 प्रतिशत 2014 से जून 2024 के बीच आया है, जबकि 370 अरब डॉलर यानी 35 प्रतिशत 1991 से 2014 बीच आया था।

भारत में चालू वित्त वर्ष (2024-25) में भी एफडीआई मजबूत रहा है। डीपीआईआईटी के आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल से जून की अवधि में 16.17 अरब डॉलर का एफडीआई भारत में आया है, जो पिछले साल समान अवधि के आंकड़े 10.9 अरब डॉलर से 47.80 प्रतिशत अधिक है।

वित्त वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही में सबसे अधिक 3.9 अरब डॉलर का निवेश सिंगापुर से, 3.2 अरब डॉलर का निवेश मॉरीशस से, 2.4 अरब डॉलर का निवेश नीदरलैंड से, 1.5 अरब डॉलर का निवेश अमेरिका से, जापान से 629 मिलियन डॉलर, साइप्रस से 615 मिलियन डॉलर और यूएई से 555 मिलियन डॉलर निवेश आया था। इस दौरान सबसे ज्यादा 3.9 अरब डॉलर का एफडीआई निवेश सर्विस सेक्टर में आया है। कंप्यूटर और हार्डवेयर सेक्टर में 2.7 अरब डॉलर, गैर-पारंपरिक एनर्जी सेक्टर में 1.03 अरब डॉलर, कंस्ट्रक्शन गतिविधियों में 666 मिलियन डॉलर, ट्रेडिंग और टेलीकम्युनिकेशन सेक्टर में 460 मिलियन डॉलर और 455 मिलियन डॉलर का निवेश आया है।

वस्तुतः प्रत्यक्ष विदेशी निवेश किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो विकास, रोजगार और नवाचार के प्रमुख कारक के रूप में कार्य करता है। भारत जैसे विकासशील देश के लिए, 1991 में अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के बाद से एफडीआई इसके आर्थिक सुधारों और आधुनिकीकरण की आधारशिला रहा है। दशकों से, भारत अपने विशाल बाजार, कुशल कार्यबल और अनुकूल सरकारी नीतियों की बदौलत निवेश के लिए एक वैश्विक केंद्र के रूप में उभरा है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश से तात्पर्य किसी विदेशी संस्था द्वारा घरेलू उद्यम में किए गए निवेश से है, जिसमें उद्यम पर दीर्घकालिक हित और नियंत्रण शामिल होता है। भारत का एफडीआई के प्रति दृष्टिकोण पिछले कुछ वर्षों में काफी विकसित हुआ है। उदारीकरण से पहले यानि 1991 से पहले, भारत में एफडीआई की एक प्रतिबंधात्मक व्यवस्था थी, जिसमें कड़े नियम और सीमित विदेशी भागीदारी थी।

1991 के आर्थिक सुधारों ने अर्थव्यवस्था को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। एफडीआई के लिए नीतियों को उदार बनाया गया, जिससे विदेशी निवेशकों को भारत के बाजारों तक अधिक पहुंच मिली। इसमें दूरसंचार, ऑटोमोबाइल और आईटी जैसे उद्योगों में सुधार शामिल थे। आज, भारत वैश्विक स्तर पर एफडीआई के शीर्ष प्राप्तकर्ताओं में से एक है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, दक्षिण कोरिया और सिंगापुर जैसे देशों से निवेश आकर्षित करता है।

एफडीआई भारत की अर्थव्यवस्था में बहुआयामी भूमिका निभाता है, जो कई तरीकों से इसके विकास में योगदान देता है। एफडीआई विभिन्न क्षेत्रों में विदेशी पूंजी लगाकर भारत के सकल घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह औद्योगिक विकास को बढ़ावा देता है, बुनियादी ढांचे का आधुनिकीकरण करता है और अर्थव्यवस्था पर गुणक प्रभाव डालता है। एफडीआई विनिर्माण, आईटी और खुदरा जैसे क्षेत्रों में सीधे तौर पर लाखों नौकरियां पैदा करता है। यह सहायक उद्योगों और सेवाओं में अप्रत्यक्ष रोजगार को भी बढ़ावा देता है, जिससे बड़े और बढ़ते कार्यबल वाले देश में बेरोजगारी की चुनौतियों का समाधान होता है। इसी प्रकार दूरसंचार, ऑटोमोटिव और फार्मास्यूटिकल्स जैसे क्षेत्रों को विदेशी निवेशकों द्वारा लाई गई तकनीकी प्रगति से बहुत लाभ हुआ है।

एफडीआई ने भारत के बुनियादी ढांचे के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसमें सड़कें, बंदरगाह और बिजली संयंत्र शामिल हैं। उदाहरण के लिए, अक्षय ऊर्जा में विदेशी निवेश ने भारत को टिकाऊ ऊर्जा समाधानों की ओर बढ़ने में मदद की है।

एफडीआई भारतीय कंपनियों को वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में एकीकृत करने, उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार करने और निर्यात को बढ़ावा देने में मदद करता है। यह आईटी और फार्मास्यूटिकल्स जैसे क्षेत्रों में स्पष्ट है, जहां भारत ने एक मजबूत वैश्विक उपस्थिति स्थापित की है। विदेशी मुद्रा लाकर, एफडीआई भारत को अपने चालू खाता घाटे का प्रबंधन करने में मदद करता है, जिससे बाहरी उधार पर निर्भरता कम हो जाती है। यह सत्य है कि एफडीआई के कई लाभ हैं, लेकिन इसकी कुछ चुनौतियां भी है। एफडीआई पर अत्यधिक निर्भरता से कमज़ोरियां पैदा हो सकती हैं, खासकर तब, जब विदेशी निवेशक आर्थिक मंदी के दौरान धन वापस ले लेते हैं। इससे अर्थव्यवस्था के लड़खड़ाने का खतरा रहता है।बेहतर संसाधनों वाली विदेशी कंपनियां स्थानीय फ़र्मों से आगे निकल सकती हैं, जिससे संभावित रूप से एकाधिकार या बाज़ार में प्रभुत्व की स्थिति पैदा हो सकती है। विदेशी कंपनियों द्वारा अर्जित लाभ का एक महत्वपूर्ण हिस्सा उनके गृह देशों में वापस भेज दिया जाता है, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए लाभ सीमित हो जाता है। एफडीआई प्रवाह अक्सर विशिष्ट क्षेत्रों में केंद्रित होता है, जिससे अन्य क्षेत्रों को कम फ़ंड मिल पाता है।

–राम शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार

वाहनों का भी आवश्यक हो अवसान/ निरस्तीकरण पंजीकरण

पंजीकरण समाप्त होने के बाद भी चल रहे वाहनों पर हो कार्यवाही

सुनील दत्त गोयल

हमारे देश की सड़कों पर पंजीकरण समाप्त हो चुके वाहनों का चलना एक गंभीर समस्या बन गई है। यह न केवल यातायात नियमों का उल्लंघन है, बल्कि इससे सड़क दुर्घटनाओं के मामले में जिम्मेदारी तय करने में भी कठिनाई होती है।

हमारे देश में ऐसा एक सिस्टम डेवलप होना चाहिए कि 15 साल के बाद या जब तक वन टाइम टैक्स की वैधता होती है, उसके बाद वाहन और वाहन मालिक की केवाईसी पुनः होनी चाहिए। यानी कि री-केवाईसी का होना अति आवश्यक है। इन 10 से 15 सालों में बहुत से वाहन स्वामी अपना पता बदल लेते हैं या वाहन को बेच देते हैं, और उसका स्वामित्व हस्तांतरण नहीं करवाते। या उस वाहन को स्क्रैप कर देते हैं और स्क्रैप की सूचना सरकारी विभाग तक नहीं जाती। इसका कारण यह है कि इस तरह की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है। दूसरा, बाहर बैठे जो दलाल और कमीशन एजेंट हैं, वे इतना पैसा मांगते हैं कि कोई व्यक्ति, अगर ईमानदारी से काम करना चाहे और सरकार को सहयोग भी करना चाहे, तो वह वहां जाकर भ्रष्टाचार में डूबे हुए तंत्र को देखकर वापस आ जाता है।

आज सरकार के पास सबसे बड़ी समस्या यह है कि जितने भी नए वाहन सड़क पर आते हैं, उनका तो पंजीकरण हो जाता है। लेकिन वह वाहन कब स्क्रैप पर चले गए, साल्वेज में चले गए, सड़क से बाहर हो गए, या उनकी केवाईसी बदल गई, इसका सरकार को कोई पता नहीं होता है। और भी ज्यादा गैर-जिम्मेदाराना बात यह है कि जो वाहन दुर्घटनाग्रस्त हो जाते हैं और टोटल लॉस में इंश्योरेंस कंपनी उनका भुगतान कर देती है और उन्हें साल्वेज में बेच देती है। तो भी न तो इंश्योरेंस कंपनी और न ही उस वाहन का मालिक संबंधित विभाग को सूचना देता है कि यह वाहन समाप्त हो चुका है। इस काम के लिए इन दोनों संबंधित पक्षकारों को जिम्मेदार बनाना चाहिए। यह सरकार के अधिकारियों की जिम्मेदारी बनती है। और जब तक सरकार के पास इस तरह का डेटा संपूर्ण रूप से उपलब्ध नहीं होगा कि कौन-सा वाहन कब सड़क से हट चुका है, तब तक उसके हिसाब से योजना बनाना बड़ा मुश्किल होगा।

यदि सरकार चाहे, तो रात्रि गश्त पर जो पुलिस होती है, उसे मालूम पड़ सकता है कि कितने ऐसे वाहन जो बहुत लंबे समय से एक ही जगह पर खड़े हुए हैं, उनके टायर-ट्यूब खराब हो चुके हैं, वे साल्वेज का रूप ले चुके हैं, और सड़क पर चलने योग्य नहीं हैं। ऐसे वाहन केवल सड़क के किनारे खड़े होकर सरकारी जगह पर अतिक्रमण कर रहे हैं। सरकार को चाहिए कि गश्ती पुलिस और होमगार्ड की जिम्मेदारी लगाई जाए कि उन वाहनों को वहां से उठाएं और स्क्रैप कर दें।

कई बार मुझे सरकारी अधिकारियों और उनके काम करने के तरीके पर बड़ी हंसी आती है कि भारत में जब भी जिस राज्य में यह विभाग खुले, तब से लेकर आज तक जो वाहन पहली बार वहां पंजीकृत हुआ, वह आज भी उसी नाम पते पर दर्ज है। तो क्या सरकार और उसके अधिकारी यह मानते हैं कि वह व्यक्ति आज भी, आजादी के 75 वर्ष बाद, जिंदा मौजूद होकर सड़क पर वाहन चला रहा होगा?

सरकार को चाहिए कि लगभग हर 10 वर्ष के बाद वाहन की और निजी वाहनों की खासतौर पर, और वाहन मालिक की री-केवाईसी अवश्य करती रहे। जब तक पुराने वाहनों का पंजीकरण निरस्त नहीं होगा, तब तक सरकार के पास ऐसा कोई आंकड़ा सही नहीं हो सकता कि वर्तमान में कितने पंजीकृत वाहन चल रहे हैं।

सरकार एक पंजीकरण सीरीज समाप्त करती है और दूसरी शुरू कर देती है। लेकिन यह ध्यान नहीं देती कि पुरानी सीरीज के कितने नंबर खाली हो चुके हैं। उनकी गहन जांच करना आवश्यक है। इनमें से कई वाहन आज भी अनैतिक गतिविधियों में शामिल होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। धन्यवाद,

–सुनील दत्त गोयल,
महानिदेशक
इम्पीरियल चैंबर ऑफ़
कॉमर्स एंड इंडस्ट्री जयपुर,
राजस्थान

10 पुलिस थानों की टीमों ने बजरी माफियाओं के खिलाफ कार्रवाई की

पुलिस ने 34 ट्रैक्टर-ट्रॉली बरामद कर दो बजरी माफियाओं को गिरफ्तार किया

धौलपुर, (निसं)। अवैध बजरी परिवहन के खिलाफ जिला पुलिस ने अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया है। एसपी सुमित मेहरड़ा के नेतृत्व में करीब 10 पुलिस थानों की टीम ने कोतवाली थाना क्षेत्र के देव का पुरा चंबल घाट के आसपास बजरी माफियाओं के खिलाफ कार्रवाई को अंजाम दिया है।

कार्रवाई के दौरान पुलिस ने 34 ट्रैक्टर-ट्रॉली को बरामद कर दो बजरी माफियाओं को गिरफ्तार किया है। देर रात की गई कार्रवाई में अधिकांश बजरी माफिया बीहड़ में कूदकर फरार हो गए, जिनकी पुलिस तलाश कर रही है।

एसपी सुमित मेहरड़ा ने बताया जयपुर पुलिस मुख्यालय के निर्देश में अवैध माइनिंग के खिलाफ विशेष अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के अंतर्गत धौलपुर पुलिस लगातार माफिया के खिलाफ कार्रवाई कर रही है। उन्होंने बताया कि बीती रात पुलिस को मुखबिर द्वारा इनपुट मिला कि कोतवाली थाना इलाके में देव का पुरा गांव के नजदीक चंबल नदी के घाट पर बजरी माफिया अवैध तरीके से बजरी का परिवहन कर रहे हैं। मुखबिर के लोकेशन के आधार पर धौलपुर कोतवाली, धौलपुर सदर, निहालगंज, मनिया, सैपऊ, दिहोली, बसई डांग, बाड़ी सदर, बाड़ी कोतवाली, डीएसटी टीम, पुलिस लाइन का जाब्ता एवं वन विभाग की टीम को कार्रवाई में शामिल किया गया।

■ देर रात की गई कार्रवाई में अधिकांश बजरी माफिया बीहड़ में कूदकर फरार हो गए

करीब 10 पुलिस थानों की टीम ने चंबल घाट पर सुनियोजित तरीके से घेराबंदी कर कार्रवाई को अंजाम दिया है। कार्रवाई के दौरान पुलिस ने चंबल बजरी से भरे हुए 34 ट्रैक्टर-ट्रॉली को पकड़ा है। वहीं आरोपी 19 वर्षीय मनोज कुमार पुत्र श्रीकृष्ण निवासी भूड़ा एवं 35 वर्षीय रामहेत पुत्र रामअख्तियार निवासी नथुआ का पुरा को गिरफ्तार किया है। ट्रैक्टर-ट्रॉली को जब्त कर पुलिस ने बजरी माफियाओं के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

कार्रवाई के दौरान पुलिस ने 34 ट्रैक्टर ट्रॉली को तो मौके से बरामद कर दिया, लेकिन अधिकांश बजरी माफिया अंधेरे का फायदा उठाकर जंगल में फरार हो गए। एसपी ने बताया आरोपियों के संभावित ठिकानों पर पुलिस लगातार दबिश दे रही है। जिन्हें शीघ्र गिरफ्तार कर कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

मुकंदरा हिल्स टाईगर रिजर्व को एक और बाघिन मिली

कोटा, (निसं)। मुकंदरा हिल्स टाईगर रिजर्व को एक ओर बाघिन मिली है। अभेड़ा बॉयोलोजिकल पार्क में बंद मादा शावक को यहां रिलीज किया गया है।

डीएफओ मुकंदरा मुथु एस ने बताया कि मादा शावक को दरा के सॉफ्ट एनक्लोजर में छोड़ा गया है। मादा शावक के लिए मुकंदरा में पांच हैक्टेयर का सॉफ्ट एनक्लोजर बनाया गया है। इसके पास ही प्रे-बेस के लिए दो एनक्लोजर बने हुए हैं। इससे पहले सुबह इसकी प्रक्रिया शुरू की गई। अभेड़ा पार्क में मादा शावक को ट्रेंकुलाईज किया गया। डॉक्टर्स की टीम ने हेल्थ चेक अप किया। इसके बाद रेडियोकॉलर पहनाया गया। करीब 11 बजे फॉरेस्ट की टीम मादा शावक को लेकर मुकंदरा टाईगर रिजर्व के लिए रवाना हुई। मादा शावक बाघिन टी-114 की संतान है। शावक का जन्म नवंबर 2022 में रणथम्भौर रिजर्व में हुआ था। बाघिन टी-114 की मौत उसके दो शावक (नर व मादा) को 1 फरवरी 2023 को कोटा अभेड़ा बॉयोलोजिकल पार्क में लाया गया था। उस समय शावकों की उम्र ढाई माह थी। पार्क में वनकर्मियों ने इनका पालन-पोषण किया। दोनों शावकों को एनटीसीए से छोड़ने की अनुमति मिल चुकी थी, लेकिन भारत सरकार की अनुमति मिलने का इंतजार था। कुछ दिनों पहले ही भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय वन्य जीव प्रभाग ने इसके आदेश जारी किए थे। जिसके बाद नर शावक को 4 दिसंबर को बूंदी के रामगढ़ विषधारी टाइगर में रिलीज किया। बुधवार को सात दिन बाद मादा शावक को मुकंदरा में रिलीज किया। अभी मुकंदरा में टाइगर का एक ही जोड़ा है, जिन्हें एमटी 5 व एमटी 6 के नाम से जाना जाता है। मादा शावक को मुकंदरा में रिलीज करने से इनकी संख्या तीन हो गई है। बाद में दो बाघिन को एमपी से लाकर यहां छोड़ा जाएगा। इस दौरान वाइल्ड लाइफ डीएफओ अनुराग भटनागर, मुकंदरा डीएफओ मुथु एस, रामगढ़ विषधारी डीएफओ संजीव शर्मा, सवाई माधोपुर पशुपालन विभाग से डॉ. राजीव गर्ग, डॉ. तेजेंद्र रियाड़, डब्ल्यू डब्ल्यू एफ से राजशेखर, दौलतसिंह, क्षेत्रीय वन अधिकारी अभेड़ा बॉयोलोजिकल पार्क रतनलाल बैरवा व अभेड़ा पार्क का स्टाफ मौजूद रहा।

शिल्पग्राम उत्सव 21 से, 20 राज्यों से 800 कलाकार आयेंगे

उदयपुर, (निसं)। उदयपुर के हवाला गांव स्थित शिल्प के आंगन में शिल्प और कला के महोत्सव का आगाज 21 दिसम्बर को होगा। दस दिवसीय इस महोत्सव की शुरूआत राज्यपाल व पश्चिम क्षेत्र सांस्कृति के केन्द्र के अध्यक्ष हरिभाऊ किसनराव बागड़े नगाड़ा बजाकर करेंगे। शिल्पग्राम उत्सव में 20 राज्यों से 800 कलाकार शिरकत करेंगे। महोत्सव में पत्थर पर कलाकारी कर बनाए गए 12 राशियों के चिन्ह आकर्षण का केन्द्र होंगे। वहीं इस बार मेले में कारीगरी के प्रदर्शन के लिए ऐसे शिल्पकारीगरों को भी आमंत्रित किया जा रहा है जो मौके पर ही अपनी कारीगरी का प्रदर्शन भी करेंगे। सालावास की दरिया, पटू शाल, कोटा डोरियां, कश्मीरी बुनाई, मोलेला की मिट्टी शिल्प, लाख की चूड़ियां बनाने की प्रक्रिया को मौके पर प्रदर्शन की व्यवस्था की जा रही है।

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के निदेशक फुरकान खान ने बताया कि इस वर्ष की थीम 'लोक के रंग-लोक के संग' रखी गई है। इस दस दिवसीय उत्सव में करीब 65 कला दलों द्वारा देश की विभिन्न हिस्सों की सांस्कृतिक विरासत प्रदर्शित की जाएगी। थड़ों पर बहरूपिया, कच्छी घोड़ी, कच्छी लोकगायन, राठवा, सुंदरी वादन, अल्गोजा वादन, गवरी, मशक वादन, मांगणियार, चकरी ताल, कालबेलिया आदि का प्रदर्शन दिनभर किया जाएगा। उन्होंने बताया कि मेले में बहुरूपी कला का प्रदर्शन भी होगा जिसके लिए बहुरुपिए कलाकारों को भी आमंत्रित किया गया है। साथ ही इस बार शिल्पग्राम में 12 राशियों के चिन्ह विशेष आकर्षण का केन्द्र रहेंगे। इन राशि चिन्हों को देश के युवा मूर्तिकारों द्वारा पत्थर में विशेष रूप से शिल्पग्राम उत्सव के लिए तराशा गया है।